बुद्धानुस्सति ध्यान

''अरहं''

मेरे स्वामि भगवान बुद्ध जी राग, द्वेष, मोह आदि मन की सभी गंदगियों को नष्ट किये है। चोरी से भी पाप नहीं किये है। सभी पापों से मुक्त हुये हैं। सभी प्राणियों का लौकिक पूजा और लोकोत्तर पूजा स्वीकार करने के योग्य है।

भगवान बुद्ध जी ! आँख से रूप को देखकर, उस रूप के प्रति आसक्त नहीं हुये है। घृणा भी नहीं हुये है, रूप के प्रति आशा को नष्ट किये है। कान से आवाज को सुनकर, उस आवाज के प्रति आसक्त नहीं हुये है। घृणा भी नहीं हुये है, आवाज के प्रति आशा को नष्ट किये है। नाक से गंध को जानकर, उस गंध के प्रति आसक्त नहीं हुये है। घृणा भी नहीं हुये है, गंध के प्रति आशा को नष्ट किये है। जीभ से स्वाद को पहचानकर, उस स्वाद के प्रति आसक्त नहीं हुये है। घृणा भी नहीं हुये है, स्वाद के प्रति आशा को नष्ट किये है। शरीर से स्पर्श को जानकर, उस स्पर्श के प्रति आसक्त नहीं हुये है। घृणा भी नहीं हुये है, स्पर्श के प्रति से आशा को नष्ट किये है। मन से विचार सोचकर, उस विचार के प्रति आसक्त नहीं हुये है। घृणा भी नहीं हुये है, विचार के प्रति से आशा को नष्ट किये है।

भगवान बुद्ध जी ! अरहं होते है... अरहं होते हैं... अरहं होते हैं...।

''सम्मासम्बुद्ध''

मेरे स्वामि भगवान बुद्ध जी दुख नाम का परम सत्य को बिना किसी गुरू के उपदेश से बोध किये हैं। दुख उत्पन्न होने का कारण, उस तृष्णा को बिना किसी गुरू के उपदेश से नाश किये है। दुख का नाश नाम का परम सत्य को को बिना किसी गुरू के उपदेश से साक्षात् किये है। दुख नाश करने का मार्ग नाम का परम सत्य को बिना किसी गुरू के उपदेश से सम्पूर्ण रूप से बढ़ाये है।

इस प्रकार से ये चार परम सत्य को बिना किसी गुरू के उपदेश से बोध करने के कारण सम्मासम्बुद्ध होते हैं... सम्मासम्बुद्ध होते हैं... सम्मासम्बुद्ध होते हैं...।

''विज्जाचरणसम्पन्न''

मेरे स्वामि भगवान बुद्ध जी सभी प्राणियों के अतित जन्म को देखने का विद्या ''पुब्बे निवासानुस्सति ज्ञान'' को पाये हैं। सभी प्राणियों के कर्म के अनुसार मृत्यु होने का और कर्म के अनुसार जन्म लेने के आकार को देखने की विद्या ''चुतुपपात ज्ञान'' को पाये हैं। बहुत दूर देव-ब्रह्म का या पास का आवाज को बिना किसी बाधा से सुनने की विद्या ''दिब्ब सोत ज्ञान'' को पाये हैं। बहुत दूर का या पास का चीज को बिना किसी बाधा से देखने की विद्या ''दिब्ब चक्खु ज्ञान'' को

पाये हैं। सभी देव मनुष्यों के मन के स्वभाव को देखने की विद्या ''परचित्त विजानन ज्ञान'' को पाये हैं। सभी देव मनुष्यों के जीवन में छिपे विकारों (राग, द्वेष, मोह आदि) को देखने की विद्या ''आसयानुसय ज्ञान'' को पाये हैं। सभी देव मनुष्यों के पास निर्वाण पाने का भाग्य है या नहीं, देखने की विद्या ''इन्द्रिय परोपरियत्त ज्ञान'' को पाये हैं। अपने भीतर के सारे गंदगी (राग, द्वेष, मोह आदि) नष्ट हो गया है, ''आसवक्खय ज्ञान'' को पाये हैं। आकाश से जाने की क्षमता, जल में चलने की क्षमता, धरती में समा दूसरे जगह से प्रकट होने की क्षमता, अंतर्धान हो कहीं भी जाने की क्षमता आदि अनेक प्रकार के ऋद्धि (चमत्कार) दिखाने की विद्या ''ऋद्धिविध ज्ञान'' को पाये हैं।

इस प्रकार से अनंत विद्या से सम्पन्न हो, भगवान बुद्ध जी का आचरण, जीवन चर्या पूर्ण पारिशुद्ध है। जैसे में - बिना झूठ बोल, बिना चुगली कर, बिना कटु वाणी बोल, व्यर्थ वाणी छोड़, पारिशुद्ध वाणी से युक्त हुये हैं। ज्ञान मिलने वाले वचन बताये है। विकार शांत होने वाले वचन बताये है। समाधि मिलने वाले वचन बताये है। मधुर-मुलायम वाणी से युक्त हुये है।

भगवान बुद्ध जी सभी प्रकार के हिंसाओ से दूर हो, सभी प्रकार के चोरी से दूर हो, अब्रह्मचारी से दूर हो, सभी प्रकार के नशाओं से दूर हो, सभी प्रकार के गलत आजीविका से दूर हो पारिशुद्ध जीवन बिताये है।

इस प्रकार से अनंत ज्ञान से, अनंत गुण से, अनंत शील से, अनंत उत्साह से, अनंत प्रज्ञा से, अनंत ज्ञान से, अनंत समाधी से, अनंत विमुक्ति से युक्त होने के कारण विज्जाचरण सम्पन्न होते हैं... विज्जाचरण सम्पन्न होते हैं... विज्जाचरण सम्पन्न होते हैं...।

''सुगत''

मेरे स्वामि भगवान बुद्ध जी राग, द्वेष, मोह को नष्ट करने वाले सुन्दर, पवित्र आर्य अष्टांगिक मार्ग को खोजे हैं। उस आर्य अष्टांगिक मार्ग पर चल सभी राग, द्वेष, मोह को नष्ट कर परम सुन्दर निर्वाण सुख को पाये है। इस कारण से भगवान बुद्ध जी सुगत होते हैं... सुगत होते हैं... सुगत होते हैं...।

''लोकविदू''

मेरे स्वामि भगवान बुद्ध जी सभी ब्रह्म लोक को, सभी दिव्य लोक को, ये मनुष्य लोक को, प्रेत लोक को, पशु-पक्षि लोक को, नरक लोक को, अंड्डे से जन्म लेने वाले प्राणियों के लोक को, माँ के गर्भ से जन्म लेने वाले प्रणियों के लोक को, सड़े-गले चीजों से जन्म लेने वाले प्रणियों के लोक को, अपने आप जन्म लेने वाले प्राणियों के लोक को, अनंत चक्रवाल को जान गये हैं। ये सभी लोक में जन्म लेने का मार्ग को जान गये है। ये सभी लोक से मुक्त होने का मार्ग को भी

जान गये हैं। स्वयं भी ये सभी लोक से मुक्त हो गये हैं। इस कारण से भगवान बुद्ध जी लोकविदू होते हैं... लोकविदू होते हैं... लोकविदू होते हैं...।

"अनुत्तरपुरिसदम्म सारथी"

मेरे स्वामि भगवान बुद्ध जी महाकरूणा से, महाप्रज्ञा से, देव-मनुष्यों को सुधार दिये है। बिना कष्ट देकर अपने गुण की महिमा से सुधारे हैं। अनाचारी को सदाचारी बनाये हैं, दुश्शील को शीलवान बनाये हैं, कंजूसो को दानी बनाये हैं, क्रूरों को दयालु बनाये हैं, अहंकारी को निरहंकारी बनाये है, अज्ञानी को ज्ञानी बनाये हैं, अशांत चित्त वाले लोगों को शांत चित्त बनाये है, संसार के दुखों में डूबे लोगों को संसार के दुखों से मुक्त कराये है। इस कारण से भगवान बुद्ध जी अनुत्तरो पुरिसदम्म सारथी होते हैं... अनुत्तरो पुरिसदम्म सारथी होते हैं... अनुत्तरो पुरिसदम्म सारथी होते हैं...।

"सत्था देवमनुस्सानं"

मेरे स्वामि भगवान बुद्ध जी बुद्धिमान देवताओं को, बुद्धिमान मनुष्यों को संसार के दुखों से मुक्त होने के लिए मुक्ति मार्ग को दिखाये हैं। इस प्रकार से देव-मनुष्यों का गुरू बन गये है। इस कारण से सत्था देवमनुस्सानं होते हैं... सत्था देवमनुस्सानं होते हैं... सत्था देवमनुस्सानं होते हैं... ।

"बुद्ध"

मेरे स्वामि भगवान बुद्ध जी चार परम सत्य को बोध करके, दूसरों को वो परम सत्य बोध करने के लिए बहुत सुन्दर से, अर्थसहित निर्वाण मार्ग को बताये हैं। इस कारण से भगवान बुद्ध जी बुद्ध होते हैं... बुद्ध होते हैं... बुद्ध होते हैं...।

"भगवा"

मेरे स्वामि भगवान बुद्ध जी ये सारे बुद्ध गुण को धारण करने के लिए भाग्यवान हुये है, भाग्यवान हुये है। सूर्य-चांद के प्रकाश को हराने वाले, अनंत प्रज्ञा आलोक से युक्त होने के लिए भाग्यवान हुये है, भाग्यवान हुये है।

महाकरूणा से शीतल हो गये हुये हृदय से युक्त होने के लिए भाग्यवान हुये है, भाग्यवान हुये है। भगवान बुद्ध जी भगवा होते हैं... भगवा होते हैं... भगवा होते हैं...।

भगवान बुद्ध जी का गुण अनंत है... भगवान बुद्ध जी का गुण अनंत है... भगवान बुद्ध जी का गुण अनंत है... भगवान बुद्ध जी का गुण अनंत है...भगवान बुद्ध जी का गुण अनंत है... । उन अनंत गुण वाले भगवान बुद्ध जी का मैं शरण जाता हूँ। उन अनंत गुण वाले भगवान बुद्ध जी को मेरा कोटि कोटि नमस्कार हो।।